हिंदी प्रसून-5

1. दया करो हे दयालु भगवान!

❒ पाठ-बोध

1. (क) (ii) (ख) (i)

2. झगड़ों, ईर्ष्या-द्वेष, कष्ट, सुख-समृद्धि

3. प्रस्तुत पंक्तियों में बच्चे भगवान से प्रार्थना करते हैं कि हम भारत के नन्हें बच्चे आपसे ऐसा वरदान चाहते हैं जिससे हम जात-पात के भेद को भुलाकर, छुआछूतरूपी भूत को भगाकर तथा ऊँच-नीच के भाव को मन से दूर हटाने में सफल हो सकें और प्रेम के सूत्र में बँध जाएँ।

4. (क) (iii) (ख) (iv) (ग) (i) (घ) (ii)

5. (क) बच्चे भगवान से वरदान माँग रहे हैं।

(ख) भारत के बच्चे समाज में फैले भेदभाव तथा ईर्ष्या-द्वेष को दूर करना चाहते हैं।

(ग) बच्चे भारत माँ का कष्ट दूर करना चाहते हैं।

(घ) बच्चे देश की सेवा करके अपना जीवन सफल बनाना चाहते हैं।

❒ व्याकरण-बोध

6. जात-पात ऊँच-नीच

प्रेम-सूत्र ईर्ष्या-द्वेष

सुख-समृद्धि कर्त्तव्य-मार्ग

7. (क) दयालु (ख) देवता (ग) प्रेम (घ) माँ

(ङ) सुख-समृद्धि (च) जीवन

8. (क) हमें किसी से भी ईर्ष्या-द्वेष नहीं करना चाहिए।

(ख) आज हमारा भारत सभी क्षेत्रों में समृद्धि कर रहा है।

(ग) भगवान की आराधना करने से व्यक्ति भवसागर से पार हो जाता है।

❒ योग्यता-विस्तार

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

11. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒

2. राख की रस्सी

❒ पाठ-बोध

1. (क) (iv) (ख) (ii)
2. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✓
3. (क) तिब्बत के मंत्री को यह चिंता थी कि उनका बेटा बहुत भोला था। उसमें होशियारी बिल्कुल भी नहीं थी।
   (ख) मंत्री ने अपने बेटे को उसकी बुद्धि परखने के लिए शहर भेजा था जिससे वह यह जान सके कि उनका बेटा उनके बाद खुश रहकर जीवन गुजार सकेगा या नहीं।
   (ग) मंत्री ने तीसरी बार अपने बेटे को इसलिए शहर भेजा, क्योंकि वह उस लड़की की बुद्धि की परीक्षा लेना चाहता था, जिसने दो बार उसके लड़के की मदद की थी।
   (घ) शहर में मंत्री के बेटे की सहायता एक समझदार लड़की ने की।
   (ङ) **पहली समस्या** का हल—लड़की ने सौ भेड़ों के बाल उतारे और उनको बाजार में बेच दिया जिससे प्राप्त धन से उसने जौ के सौ बोरे खरीदे तथा भेड़ों और बोरों के साथ लड़के को घर भेज दिया। **दूसरी समस्या** का हल—लड़की ने सौ भेड़ों के सींग कटवाए और उनको बाजार में बेच दिया जिससे प्राप्त धन से उसने जौ के सौ बोरे खरीदे तथा भेड़ों और बोरों के साथ लड़के को घर भेज दिया।

❒ व्याकरण-बोध

4.

व्यक्तिवाचक संज्ञा	**जातिवाचक संज्ञा**
लेह	शहर
शेरवानी	वेशभूषा
खिचड़ी	भोजन
ताँबा	धातु

5. (क) चालाकी — चालाक + ई (ख) दुखी — दुख + ई
   (ग) होशियारी — होशियार + ई
6. (क) जिंदगी चैन से चल रही थी।
   (ख) उसे होशियारी छूकर भी नहीं गई थी।
   (ग) इसका हल मैं निकाल देती हूँ।
   (घ) मंत्री की चालाकी धरी रह गई।

❒ योग्यता-विस्तार

7. विद्यार्थी स्वयं करें।
8. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

9. विद्यार्थी स्वयं करें।
10. विद्यार्थी स्वयं करें। ❑

3. अपशकुन

❒ पाठ-बोध

1. (क) (iv) (ख) (iii) (ग) (iv)
2. (क) विज्ञापन (ख) डाक-विभाग (ग) अंधविश्वास (घ) अपशकुन (ङ) रास्ता काटने
3. (क) (v) (ख) (iv) (ग) (ii) (घ) (i) (ङ) (iii)
4. (क) नीरज और गोपाल डाक विभाग के कार्यालय जा रहे थे, क्योंकि उन्हें नौकरी के संबंध में इंटरव्यू के लिए बुलाया गया था।
   (ख) घर से निकलते ही गोपाल ने बहन के छींकने के कारण कहा कि अपशकुन हो गया।
   (ग) गोपाल अपशकुन के चक्कर में पड़कर अंधविश्वास के कारण बीच रास्ते से ही लौट आया।
   (घ) एवं (ङ) विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ व्याकरण-बोध

5. (क) भरा (ख) करते हो (ग) जाना पड़ेगा (घ) मिल गई है (ङ) उड़ाएगा
6. (क) मजाक उड़ाना—रामू अपने मित्र श्यामू के मोटे शरीर की सदैव खिल्ली उड़ाता था।
   (ख) नौकरी हाथ से निकलना—मोहित अपने कार्यालय में रिश्वत लेते पकड़ा गया जिससे उसे अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ा।
7. (क) वि **ज्ञाप** न (ख) वि **श्वा** स (ग) श **कु** न (घ) **वि** पदा (ङ) विभा **ग**

❒ योग्यता-विस्तार

8. विद्यार्थी स्वयं करें।
9. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

10. विद्यार्थी स्वयं करें।
11. विद्यार्थी स्वयं करें। ❑

4. सौर ऊर्जा

❒ पाठ-बोध

1. (क) (iv) (ख) (iii) (ग) (iv)

2. (क) ✓ (ख) ✗ (ग) ✓ (घ) ✗

3. (क) (ii) (ख) (iii) (ग) (iv) (घ) (v)
(ङ) (i)

4. (क) प्रकृति (ख) भंडार (ग) गाड़ियाँ (घ) लाभ

5. (क) सूर्य से प्राप्त होने वाली ऊर्जा को 'सौर ऊर्जा' कहते हैं।

(ख) हमें लकड़ी, कोयला, तेल तथा बिजली आदि स्त्रोतों से ऊर्जा मिलती है।

(ग) सौर ऊर्जा अन्य ऊर्जा-स्त्रोतों से इसलिए उत्तम है, क्योंकि यह प्रदूषणरहित है।

(घ) सौर ऊर्जा का प्रयोग खाना बनाने, पानी गर्म करने, मसालों को सूखाने, सागर के खारे पानी को पीने योग्य बनाने एवं कल-कारखाने चलाने आदि कार्यों के लिए हो सकता है।

(ङ) सौर ऊर्जा भारत के लिए अधिक उपयोगी है, क्योंकि इसके ज्यादा-से-ज्यादा इस्तेमाल करने से पेट्रोल, डीजल आदि की बचत होगी जिससे हम विदेश गमन से मुद्रा को बचा सकेंगे।

(च) सौर ऊर्जा प्रदूषणरहित है। यह दूसरे ऊर्जा स्त्रोतों से सस्ती है तथा नए कल के लिए नव ऊर्जा के स्त्रोत समाप्ति की ओर होंगे तो यह उपयोगी सिद्ध होगी।

❒ व्याकरण-बोध

6.

असीमित	अभिशाप
अस्वस्थ	प्राचीन
दुर्भाग्यशाली	सीमित

7. (क) पर, का (ख) के, के लिए, को
(ग) में (घ) का
(ङ) के, से

❒ योग्यता-विस्तार

8. विद्यार्थी स्वयं करें।

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒

5. बंद करो तकरार

❒ पाठ-बोध

1. (क) (iv) (ख) (i) (ग) (iii)

2. तकरार, रातें, बोई, मानो

3. (क) हमें आपसी भेदभाव को त्याग देना चाहिए।
(ख) स्वच्छ हृदय में प्यार होता है।
(ग) हमें सभी से अच्छा व्यवहार करना चाहिए।
(घ) समाज के जीवन का आधार आपसी मेलजोल है।
(ङ) कवि दूसरों को अपनाने की बात कह रहा है।
(च) कवि ऊँच-नीच, जात-पाँत, छुआछूत, ईर्ष्या-द्वेष तथा स्वार्थ जैसी दीवारें तोड़ने की बात कह रहा है।

❒ व्याकरण-बोध

4.

विशेषण	**विशेष्य**
पुरानी	बात
स्वच्छ	हृदय
अच्छा	व्यवहार
ऊँची	दीवार
बंद	गली
अपना	मुहल्ला

5. बंद करो आओ गाओ

❒ योग्यता-विस्तार

6. विद्यार्थी स्वयं करें।

7. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

8. विद्यार्थी स्वयं करें।

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

❑

6. कभी मिजोरम भी आओ

❒ पाठ-बोध

1. (क) (ii) (ख) (i) (ग) (iv) (घ) (i)

2. (क) **आशय**—मिजोरम की प्राकृतिक सुषमा को देखकर ऐसा लगता है मानो यहाँ की प्रकृति को आधुनिक रूप में तराशा गया है अर्थात् जब प्रकृति में कुछ नयापन आ जाता है तो वह और भी सुंदर प्रतीत होने लगती है।

(ख) **आशय**—मिजोरमवासियों की कपड़ों पर की गई हस्तशिल्पकारी (चित्रकारी) देखते ही बनती है। जिस चित्रकारी को हम बड़ी गहनता से खोजते रहते हैं उसे वे आदिवासी अपनी कला में बड़ी आसानी से शामिल कर लेते हैं।

3. (क) (iii) (ख) (v) (ग) (iv) (घ) (ii) (ङ) (i)

4. (क) मिजोरम की सीमाएँ म्यांमार, त्रिपुरा, बांग्लादेश, मणिपुर एवं असम प्रांतों व देशों से लगी हुई हैं।

(ख) मिजोरम में तिल, राई, मकई व कसावा प्रमुख कृषि उपज हैं इसके अतिरिक्त अनन्नास, पपीता, संतरा, अदरक, हल्दी एवं कालीमिर्च अन्य पैदावारें हैं।

(ग) मिजोरम के लोकगीतों व लोकनृत्यों की यह विशेषता है कि इनके माध्यम से यहाँ सभी संस्कार, त्योहार तथा रीति-रिवाज जीवंत प्रतीत होने लगते हैं।

(घ) मिजोरम में विशिष्ट अतिथि व मौसम परिवर्तन का स्वागत अपने पारस्परिक बाँस नृत्य से करते हैं।

(ङ) मिजोरम की प्रमुख जनजातियाँ लुसाई, लखेर एवं चकमा हैं। ये जनजातियाँ अलग-अलग धर्मों का अनुसरण करती हैं। इन जनजातियों का कपड़ों पर चित्रकारी करना, बाँसों व बेंतों से सामान बनाना मुख्य व्यवसाय है।

(च) मिजोरम के मुख्य त्योहार चपचार कुट, मिमकुट व थालव फांग हैं। इन त्योहारों की मुख्य विशेषता यह है कि वहाँ के निवासी अधिकांश किसान हैं, जो अपने त्योहारों पर लोकगीत व लोकनृत्य के द्वारा कृषि की झलक दिखाते हैं।

❒ व्याकरण-बोध

5. (क) पूर्व + उत्तर (ख) गौरव + आन्वित
(ग) अधिक + अंश (घ) शीत + अवकाश
(ङ) ग्रीष्म + अवकाश

6. (क) ऐग्रीकल्चर (ख) फ्लोरीकल्चर
(ग) हॉर्टिकल्चर (घ) पिशीकल्चर

7. (क) हठात् अर्थ — हठपूर्वक (ख) बलात् अर्थ — बलपूर्वक

❒ योग्यता-विस्तार

8. विद्यार्थी स्वयं करें।
9. विद्यार्थी स्वयं करें।
10. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

11. विद्यार्थी स्वयं करें।

❑

7. आत्मविश्वास

❒ पाठ-बोध

1. (क) (iv) (ख) (iii) (ग) (ii)

2. बिखेर; पानी; आशा; करने; डाली; नीड़।

3. **भावार्थ**—कविता की इन पंक्तियों में चिड़िया के माध्यम से कवि हमें आत्मविश्वास और साहसपूर्वक प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करने की प्रेरणा देते हुए कहते हैं कि चिड़िया घोंसला गिर जाने पर अपना आत्मविश्वास नहीं खोती। वह पुन: नया घोंसला बनाने का अपने मन में संकल्प करके उस कार्य में जुट जाती है और एक नए घोंसले का निर्माण करती है। अत: हमें चिड़िया से सीखना चाहिए।

4. (क) चिड़िया चोंच में तिनका लाई।

(ख) चिड़िया ने नीड़ बनाने के लिए पहले मकान की खिड़की, उसके बाद वृक्ष की डाली चुनी।

(ग) चिड़िया पर अनेक विपदाएँ आईं—किसी ने उसके तिनकों को बिखेर दिया तथा आँधी ने उसे डराया और सताया।

(घ) चिड़िया के मन में आत्मविश्वास दृढ़निश्चय और हिम्मत के बल पर जागा।

❒ व्याकरण-बोध

5.	आँसू	टपका	आह	निकली
	पंख	समेटे	विपदाएँ	टूटीं
	अंकुर	फूटे।		
6.	जाते	**लाते**	आती	**जाती**
	सताया	**बिखराया**	समेटे	**फूटे**

❒ योग्यता-विस्तार

7. विद्यार्थी स्वयं करें।

8. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

❑

8. अपना स्थान स्वयं बनाएँ

❐ पाठ-बोध

1. (क) (i) (ख) (i) (ग) (iii) (घ) (ii)
2. (क) कृतज्ञता (ख) कोठरी (ग) शिकायत (घ) सजावट
3. (क) क्योंकि उस युवक ने अपने बादशाह की सेवा करने के अवसर को प्राप्त करना उस अच्छी नौकरी से कहीं बढ़कर समझा।
   (ख) युवक ने सबसे बड़ा वेतन अपने बादशाह की सेवा करने को कहा, क्योंकि अपने राज्य और राजा की सेवा करना व्यक्ति का परम कर्त्तव्य है।
   (ग) बादशाह ने अपने राज्य का वित्तमंत्री मंत्री के साथ आए युवक को बनाया।
   (घ) चुगलखोरों ने युवक को बादशाह की नजरों से गिराने के लिए उसकी शिकायत की कि वह खजाने का रुपया लुटा रहा है।
   (ङ) वित्तमंत्री रात के दो बजे एक चौकी पर बैठे दीए की रोशनी में कर-वसूली के कागजात देख रहे थे।
   (च) वित्तमंत्री ने राजा से एक पैसा इसलिए नहीं लिया, क्योंकि वह उस एक पैसे की पूछताछ करना चाहता था जिससे अफसरों के काम में ढील और मन में बेईमानी न पैदा हो सके।

❐ व्याकरण-बोध

4. उन्नति, पच्चीकारी, गुस्से, लज्जित
5. कृतज्ञ, वित्तमंत्री, खजांची, विश्वसनीय,
6. (क) भीतर (ख) धीरे-धीरे (ग) दिनभर (घ) इधर-उधर
   (ङ) प्रेमपूर्वक
7. उन्नति = उ + न् + न् + अ + त + इ
   ध्यान = ध् + य् + आ + न् + अ
   रत्न = र् + अ + त् + न् + अ
   शिकायत = श + इ + क् + आ + य् + अ + त् + अ
   दफ्तर = द् + अ + फ् + त् + अ + र् + अ

❐ योग्यता-विस्तार

8. विद्यार्थी स्वयं करें।
9. विद्यार्थी स्वयं करें।
10. विद्यार्थी स्वयं करें।

❐ जीवन-मूल्य

11. विद्यार्थी स्वयं करें।
12. विद्यार्थी स्वयं करें।
13. विद्यार्थी स्वयं करें।

❐

9. नीति के दोहे

❒ पाठ-बोध

1. (क) (ii) (ख) (i) (ग) (ii) (घ) (ii)

2. (क) गँवाई दिवस अमोल कौड़ी

(ख) कन-कन, निबरै, घट, टपकत

(ग) प्रेम, तोड़ो, टूटे, गाँठ

3. (क) **भाव**—बिना परिश्रम के कोई भी व्यक्ति विद्यारूपी धन प्राप्त नहीं कर सकता।

(ख) **भाव**—मुसीबत के समय जो साथ दे वही सच्चा मित्र है।

4. (क) कबीरदास जी गुरु और भगवान में पहले गुरु के चरण छूना चाहते हैं, क्योंकि उनका मानना है कि गुरु ने ही भगवान को प्राप्त करने का मार्ग बताया है।

(ख) विपत्ति के समय काम आने वाले मित्र के प्रति हमारा व्यवहार एक सच्चे मित्र की भाँति होना चाहिए।

(ग) कवि ने प्रेम को धागा इसलिए बताया है कि, क्योंकि जिस प्रकार धागे के टूटने पर उसे दोबारा जोड़ने पर उसमें गाँठ पड़ जाती है उसी प्रकार प्रेम एक ऐसा धागा है जो एक बार टूटने पर उसे दोबारा जोड़ने पर उसमें भी गाँठ पड़ जाती है।

(घ) मधुर वचन बोलने से किसी का गुस्सा उसी प्रकार ठंडा हो जाता है जिस प्रकार दूध को गर्म करते समय उसमें आए उफान को ठंडे पानी से शांत किया जाता है।

(ङ) बोली को अमोल इसलिए कहा गया है, क्योंकि व्यक्ति को बोलते समय अपनी वाणी से मधुर शब्द बोलने चाहिए। इसी वाणी से हम पराए व्यक्ति को अपना बना सकते हैं।

❒ व्याकरण-बोध

5.

गुरु	— अध्यापक, शिक्षक	गोबिंद	— ईश्वर
अभिमान	— गर्व, अहंकार	दूध	— दुग्ध
दिवस	— दिन	विपत्ति	— मुसीबत

6.

काके	— किसके	पौन	— हवा
पावै	— पाना	जुरै	— जुड़ना
बोलै	— बोलना	कन-कन	— कण-कण

7. (क) पाय — पैर

(ख) घट — घड़ा

(ग) संपत्ति — धन

(घ) साँचे — सच्चा

(ङ) मीत — मित्र

❐ योग्यता-विस्तार

8. विद्यार्थी स्वयं करें।

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

❐ जीवन-मूल्य

11. विद्यार्थी स्वयं करें।

12. विद्यार्थी स्वयं करें।

13. विद्यार्थी स्वयं करें।

❐

10. माँ की तीन आज्ञाएँ

❐ पाठ-बोध

1. (क) (i) (ख) (ii) (ग) (iv)

2. (क) धर्म (ख) विराग (ग) माता (घ) चावल (ङ) आज्ञा

3. (क) **भाव**—यदि व्यक्ति का काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकाररूपी डाकू से बचने के लिए सत्संग का, सत् विचार का, सत् आहार का और सत् आचाररूपी किला बनाकर रहेगा तो ये डाकू उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते।

(ख) **भाव**—यदि व्यक्ति दिन-भर परिश्रम और योगाभ्यास करेगा तब उसे भूख लगेगी। और वह जो भी रूखा-सूखा खाएगा उसी में उसे रसभरे पकवानों का स्वाद आएगा।

(ग) जब व्यक्ति के विचार अच्छे होंगे और कड़े परिश्रम, योगासनों एवं ध्यान लगाने से उसका मन थक जाएगा, तो उसे अवश्य ही गहरी नींद आएगी। नींद थकावट के कारण आती है, न कि विलासिता के कारण।

4. (क) गुरु गोरखनाथ बहुत पहुँचे हुए महापुरुष थे। एक बार वे राजा गोपीचंद के महल में पहुँचे।

(ख) गुरु गोरखनाथ के उपदेश सुनकर गोपीचंद के मन में विराग उत्पन्न हो गया।

(ग) गोपीचंद की माँ की तीन आज्ञाएँ निम्नलिखित थीं—

(i) पहली आज्ञा यह थी कि जैसे वह महल में सुरक्षित होकर रहता था वैसे ही बाहर भी रहना।

(ii) दूसरी आज्ञा यह थी कि जैसे महल में नाना प्रकार के भोजन स्वाद से खाया करता था वैसे ही जंगल में खाना।

(iii) जिस प्रकार महल में दासियों की मधुर ध्वनि सुनकर गहरी नींद में सो जाता था, उसी प्रकार वन में भी गहरी नींद सोना।

(घ) गोपीचंद बड़े ही संस्कारी, धर्म के प्रति आस्था और अपनी माता के आदेशों का पालन करने वाले व्यक्ति थे।

(ङ) इस पाठ से हमें यह शिक्षा मिलती है कि काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार हमारे सबसे बड़े शत्रु हैं। इनको जीतकर ही हम सुखी और सुरक्षित रह सकते हैं।

❒ व्याकरण-बोध

5.

उद्देश्य	**विधेय**
(क) गुरु गोरखनाथ	घूम-घूमकर उपदेश दिया करते थे।
(ख) महाराज	मातृभक्त थे।
(ग) गोपीचंद	राज्य त्यागकर संन्यासी हो गए।
(घ) संन्यासी बनकर राजा	देश-देश में घूमते हुए अलख जगाने लगे।
(ङ) गोपीचंद की माँ ने	एक-एक करके चावल के तीन दाने उसके भिक्षा-पात्र में डाल दिए।

6. विद्यार्थी स्वयं करें।

7. (क) संन्यास ले लो (ख) खाना खा लो
(ग) पानी पी लो (घ) छाता ले लो

8. (क) क्या गोपीचंद महल में रहते थे?
(ख) राजा गोपीचंद की धर्म में गहरी रुचि थी।
(ग) अरे! गोपीचंद तूने संन्यास ले लिया है।
(घ) क्या तू भिक्षा लेने आया है?
(ङ) हाँ, माँ! तेरा बेटा अब भिक्षुक है।

9. (क) माता का भक्त, प्रभु का भजन, भिक्षा का पात्र, गंगा का जल।
(ख) योग + आसन, परम + आत्मा, सत्य + आग्रह, शुभ + आगमन।

❒ योग्यता-विस्तार

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

11. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

12. विद्यार्थी स्वयं करें।

13. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒

11. अर्जुन का मोह-भंग

❒ पाठ-बोध

1. (क) (iii) (ख) (iv) (ग) (iii)

2. (क) वीरों, (ख) मोह, (ग) अधर्म, (घ) अमर, (ङ) भंग।

3. **श्रीकृष्ण**—इस एकांकी में श्रीकृष्ण के चरित्र की विशेषता यह है कि वे व्यक्ति के कर्त्तव्य-पालन को सर्वोपरि मानते हैं। इसलिए वे अर्जुन के सारथी बनकर उसे धर्म-युद्ध करने का उपदेश देते हैं।

   अर्जुन—अपने सगे-संबंधियों के प्रति मोहवश युद्ध न करने का फैसला करते हैं। परंतु धर्म-पालन के लिए मोह त्यागकर युद्ध करते हैं।

4. (क) शत्रु पक्ष में अर्जुन को पितामह भीष्म, गुरु द्रोण तथा मामा शल्य आदि योद्धा खड़े हुए दिखाई दिए।

   (ख) अर्जुन का रथ श्रीकृष्ण जी चला रहे थे। रथ चलाने वाले को सारथी कहते हैं।

   (ग) अर्जुन इसलिए युद्ध नहीं करना चाहता था, क्योंकि युद्ध मैंदान में उसके अपने सगे-संबंधी सामने खड़े थे।

   (घ) अधर्म पर चलने वालों का नाश करना ही श्रीकृष्ण ने वीरों का धर्म बताया।

   (ङ) श्रीकृष्ण ने सच्चा संन्यासी उसे बताया है, जो अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए किसी फल की इच्छा नहीं करता।

   (च) श्रीकृष्ण द्वारा दिए गए उपदेश को सुनकर अर्जुन का मोह-भंग हो जाता है और वह अपने कर्त्तव्य का पालन करने के लिए युद्ध करता है।

❒ व्याकरण-बोध

5. (क) मुझसे शस्त्र नहीं उठाया जाएगा।

   (ख) मुझसे उसकी निंदा नहीं की जाएगी।

6. गुरु, संबंधी, वीर, सेना, कौरव,
   पांडव, कायर, बंधु, बांधव।

7. नीति, सच, वीरता अपमान, धर्म सेना।

❒ योग्यता-विस्तार

8. विद्यार्थी स्वयं करें।

9. जब अर्जुन ने युद्ध करने से मना किया तब श्रीकृष्ण ने उन्हें बताया कि धर्म-युद्ध में किसी प्रकार का मोह करना अच्छा नहीं होता। और वीर पुरुष का धर्म है कि वह अधर्म पर चलने वालों का नाश करे जो क्षत्रिय धर्म का पालन नहीं करता उसकी सर्वत्र निंदा होती है। हे अर्जुन! सच्चा संन्यासी वही है जो अपने कर्त्तव्य का पालन करता है और किसी फल की इच्छा नहीं करता। ऐसा व्यक्ति ही ईश्वर को प्राप्त कर सकता है इसलिए हे अर्जुन! मोह त्यागकर अपने कर्त्तव्य का पालन करो।

❒ जीवन-मूल्य

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

11. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒

12. भिक्षा-पात्र

❐ पाठ-बोध

1. (क) (i) (ख) (iii) (ग) (ii)

2. (क) अकाल में सबकी व्याकुलता देखकर महात्मा बुद्ध ने लोगों की मदद करने के लिए नगर के धनी भक्तजनों को बुलाया।

(ख) सुप्रिया भगवान तथागत के प्रिय शिष्य अनाथपिंडद की बेटी थी।

(ग) सुप्रिया की बात सुनकर धनी सेठों ने अपने भंडार सुप्रिया के भिक्षा-पात्र में उलीच दिए। पात्र हमेशा भरा रहने लगा। समस्त नगरवासियों का उद्धार हो गया। किसी अकाल-पीड़ित को भूखा नहीं रहना पड़ा।

(घ) महात्मा बुद्ध ने सुप्रिया को 'तुम्हारा निश्चय पूरा हो!' कहकर आशीर्वाद दिया।

(ङ) नगर के हर आँगन में अनाज पहुँचाने का भार सुप्रिया ने लिया।

❐ व्याकरण-बोध

3.

प्रजा	प्राण	प्रश्न
धर्मपाल	वर्ष	आशीर्वाद

4.

विज्ञान	निर्जन
विशेष	निर्बल
विजय	निर्धन

5. वृद्धा अभागिन शिक्षिका सेठानी

6.

हाथ	कर	शिष्य	चेला	आँख	नेत्र
भगवान	ईश्वर	वर्षा	बारिश	द्वार	दरवाजा
मुख	मुँह	अन्न	अनाज	धरती	वसुधा

7. (क) दयावान (ख) उदार (ग) स्वार्थी

❐ योग्यता-विस्तार

8. विद्यार्थी स्वयं करें।
9. विद्यार्थी स्वयं करें।
10. विद्यार्थी स्वयं करें।
11. विद्यार्थी स्वयं करें।
12. विद्यार्थी स्वयं करें।

❐ जीवन-मूल्य

13. विद्यार्थी स्वयं करें।
14. विद्यार्थी स्वयं करें। ❐

13. कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

❒ पाठ-बोध

1. (क) (ii) (ख) (i) (ग) (i)

2. **भावार्थ**—प्रस्तुत पंक्तियों के माध्यम से कवि हमें आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। इसके लिए कवि कहता है कि व्यक्ति को असफलता को चुनौती के रूप में स्वीकार करना चाहिए और यह जानने की कोशिश करनी चाहिए कि इसके पीछे कौन-सी कमी शेष रह गई है। अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपनी नींद और चैन को भूल जाइए और सामने आने वाली मुसीबतों से मत घबराइए, उनका डटकर मुकाबला कीजिए, क्योंकि बिना संघर्ष किए विजय हासिल नहीं होती। और यह बात स्मरण रखिए कि कोशिश करने वालों को एक-न-एक दिन सफलता अवश्य मिलती है।

3. सिंधु, लौटकर, मोती; पानी, उत्साह; हैरानी, खाली, कोशिश; हार।

4. (क) नन्हीं चींटी से हमें यह प्रेरणा मिलती है कि हमें सफलता प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए।

(ख) गोताखोर अनेक बार खाली हाथ लौटने पर भी समुद्र में डुबकियाँ इसलिए लगाता है, क्योंकि उसे विश्वास है कि उसके हाथ हर बार समुद्र से खाली नहीं आएँगे।

(ग) कवि हमें यह सन्देश देता है कि हमें विफलता (असफलता) को एक चुनौती के रूप में स्वीकार करना चाहिए और यह देखना चाहिए कि हममें क्या कमी रह गई है, उसे दूर करके सफलता प्राप्त करनी चाहिए।

❒ व्याकरण-बोध

5. (क) गोताखोर = गोता + खोर = डुबकी लगाने वाला
आदमखोर = आदम + खोर = नरमांस खाने वाला
सूदखोर = सूद + खोर = ब्याज से जीविका चलाने वाला
हरामखोर = हराम + खोर = हराम की चीजें खाने वाला

(ख) चलना, अखरना, फिसलना, लगाना, भरना, आना।

6. विश्वास = व् + इ + श् + व् + आ + स् + अ
उत्साह = उ + त् + स् + आ + ह् + अ
दीवार = द् + ई + व् + आ + र् + अ
चुनौती = च् + उ + न् + औ + त + ई

7. (क) पर (ख) में (ग) ने (घ) का (ङ) से

❒ योग्यता-विस्तार

8. विद्यार्थी स्वयं करें।

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

11. विद्यार्थी स्वयं करें। ❒

14. पानी रे पानी

❒ पाठ-बोध

1. (क) (iv) (ख) (ii) (ग) (i)

2. (क) भूगोल (ख) हक (ग) पहलू
(घ) गुल्लक, प्रकृति (ङ) जल-भंडार (च) समतल

3. (क) बहुत सस्ता—केरल में व्यापारियों को नारियल पानी के मोल के बराबर मिलता है।
(ख) तत्काल मर जाना—राम के वनवास जाने की सूचना सुनकर महाराज दशरथ को पानी न माँगना पड़ा।
(ग) शर्मिन्दा करना—हमारे गणित अध्यापक के लड़के ने गणित विषय में सबसे कम नम्बर लाकर उन्हें समस्त स्टाफ के सामने पानी-पानी कर दिया।
(घ) बर्बाद कर देना—सेठ जी की बीमारी के दौरान उनके लड़के ने अपने पिता का कारोबार हाथ में लेकर उस पर पानी फेर दिया।
(ङ) शांति भंग करना—कुछ असामाजिक तत्त्व हमारे समाज में पानी में आग लगाने का प्रयास करते हैं।
(च) मर्यादा की रक्षा करना—यदि कोई योद्धा पानी रखता तो द्रौपदी का भरी सभा में चीर-हरण न होता।
(छ) बेइज्जती होना—भरी सभा में द्रोपदी का चीर-हरण देखकर पांडवों का पानी उतर गया।
(ज) बेइज्जत करना—दीनदयाल जी ने भरी सभा में मुखिया जी की पोल खोलकर उनका पानी उतार दिया।

4. (क) गर्मी के दिनों में घरों में पानी की बड़ी किल्लत हो जाती है। नल सूख जाते हैं, पानी आता भी है तो वक्त-बेवक्त आता है। देश के कई भागों में तो अकाल की स्थिति बन जाती है।
(ख) बरसात के मौसम में अत्यधिक वर्षा के कारण बाढ़ की स्थिति पैदा हो जाती है। हमारे आस-पास घर, स्कूल, सड़कों, रेल की पटरियों पर भी पानी भर जाता है। देश के कई भाग बाढ़ में डूब जाते हैं।
(ग) धरती को 'गुल्लक' इसलिए कहा गया है, क्योंकि हमारी यह धरती भी एक बड़ी गुल्लक के समान है। प्रकृति वर्षा के मौसम में खूब पानी बरसाती है, उस पानी को हम तालाबों, झीलों में एकत्र कर लेते हैं जिससे हमारा भूजल भंडार समृद्ध हो जाता है। बरसात के मौसम के बाद हम इस भूजल को पूरे वर्ष उपयोग में लाते हैं।

(घ) बड़ी संख्या में इमारतें बनने से बाढ़ और अकाल की स्थिति पैदा हो जाती है, क्योंकि हमने अपने स्वार्थ के लिए तालाबों को पाटकर समतल बना दिया। बरसात का जो पानी तालाबों में एकत्र होता वह गर्मी के दिनों में उपयोग में लाया जा सकता था, जिससे बाढ़ और अकाल पर हम कुछ नियंत्रण कर पाते।

(ङ) तालाबों और झीलों को सुरक्षित रखकर हम भूजल भंडार को सुरक्षित रख सकते हैं।

(च) पाठ में जलचक्र के महत्त्व को समझकर अपने आास-पास के जलस्रोतों, तालाबों और नदियों को सुरक्षित रखकर पानी के संकट से मुक्ति (बचने) की बात की गई है।

(छ) ''अपने घर के नल-पाइप में मोटर लगवाना दूसरों का हक छीनने के बराबर है।'' लेखक ऐसा इसलिए मानते हैं, क्योंकि जब नल-पाइप में मोटर लगा दी जाती है तो वह दूसरों के हिस्से का पानी भी खींच लाती है और अन्य लोग जो उस पानी के वास्तविक हकदार हैं, वे पानी से वंचित रह जाते हैं।

❒ योग्यता-विस्तार

5. विद्यार्थी स्वयं करें।

6. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒

15. जहाँ चाह वहाँ राह

❒ पाठ-बोध

1. (क) (iv) (ख) (iv) (ग) (iv)

2. (क) पेंगें, (ख) चुनौती, (ग) दंग, (घ) झुकने, (ङ) विश्वास; धैर्य।

3. (क) इला सचानी कशीदाकारी का काम करती है।

(ख) इला को परीक्षा के लिए उस जैसे व्यक्ति को अतिरिक्त समय मिलने की जानकारी नहीं थी।

(ग) इला ने कशीदाकारी का काम अपनी दादी और माँ से सीखा।

(घ) इला की कशीदाकारी में खास बात यह थी कि उसके द्वारा काढ़े गए परिधानों में उसकी मातृभूमि के साथ-साथ कई अन्य शहरों की संस्कृतियाँ भी झलक रही थीं। पत्तियों को चिकनकारी से सजाया था। डंडियों को कांथा से उभारा था। पशु-पक्षियों की ज्यामितीय आकृतियों को कसूती और जंजीरों से उठा रखा था। ये डिजाइनें सभी को आकर्षित कर रही थीं।

(ङ) नहीं; इला अपने पैर के अँगूठे से कुछ भी करना कभी न सीख पाती, अगर उसके आस-पास के लोग उसके लिए काम स्वयं कर देते और उसको कुछ करने का मौका नहीं देते।

(च) इस पाठ में ऐसे कई खेलों के नाम आए हैं, जिन्हें बच्चे खेलते हैं; वे हैं—पत्तों से पिटपिटी बजाना, गिट्‌टे खेलना, पिट्‌ठू खेलना, झूला झूलना, पकड़म-पकड़ाई, विष-अमृत के खेल।

❒ व्याकरण-बोध

4. (क) जब इन खेलों से मन ऊब जाता तो पेड़ की ऊँची डालियों पर झूला झूलते।
(ख) वह बहुत कोशिश करती पर उसके हाथ उसका साथ न देते।
(ग) किसी काम को वह इतनी फुरती से कर जाती कि देखने वाले चकित रह जाते।
(घ) इला परेशानियों के आगे हार मानने वाली न थी।
(ङ) दोनों अँगूठों के बीच में सुई दबाकर कच्चा रेशम पिरोना आसान काम नहीं था।
(च) इला अपने हुनर के प्रति गर्व और खुशी महसूस करती है।

5. (क) इन बेल-बूटों को इला सचानी ने सजाया था।
(ख) कढ़ाई के ये नमूने इला की हिम्मत की अनूठी मिसाल हैं।
(ग) जो हम हाथों से करते हैं उसने वह सब अपने पैरों से करना सीखा।
(घ) इला को समय रहते यह जानकारी मिल जाती है तो कितना अच्छा रहता।

❒ योग्यता-विस्तार

6. विद्यार्थी स्वयं करें।
7. विद्यार्थी स्वयं करें।
8. विद्यार्थी स्वयं करें।

❒ जीवन-मूल्य

9. विद्यार्थी स्वयं करें। ❒

16. सच्ची जीत

❒ पाठ-बोध

1. (क) (ii) (ख) (iii) (ग) (i) (घ) (i)

2. (क) गाँव वालों ने दयाराम से (ख) शेरसिंह ने दयाराम से
(ग) दयाराम ने शेरसिंह से (घ) शेरसिंह ने दयाराम से

3. (क) अभिमानी, दुष्ट (ख) आदर
(ग) खरबूजा (घ) गाड़ी
(ङ) अच्छाई

4. (क) (ii) (ख) (iv) (ग) (i) (घ) (v) (ङ) (iii)

5. (क) गाँव के लोग शेरसिंह से इसलिए नहीं बोलते थे क्योंकि शेरसिंह अभिमानी और दुष्ट प्रकृति का था।
(ख) दयाराम का स्वभाव नम्र था।
(ग) शेरसिंह दयाराम के खेत में कभी अपने बैल छोड़कर, कभी उसके खेत में जाने वाली पानी की नाली को तोड़कर उसे हानि पहुँचाता था।

(घ) एक बार बरसात के मौसम में शेरसिंह की अनाज की भरी गाड़ी दलदल में फँस गई। उसके कमजोर बैल बैलगाड़ी को दलदल से बाहर न निकाल सके। उस संकट के समय दयाराम ने अपने मजबूत बैलों द्वारा अनाज से भरी गाड़ी को दलदल से बाहर निकाल दिया। उस घटना ने शेरसिंह के व्यवहार में परिवर्तन ला दिया।

(ङ) इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि बुराई को भलाई से जीता जा सकता है।

(च) विद्यार्थी स्वयं करें।

❐ व्याकरण-बोध

6.

सर्वनाम शब्द	सम्बन्धित संज्ञा शब्द
तुम	दयाराम
वह	शेरसिंह
उसे	शेरसिंह

7.

शब्द	विपरीत शब्द	शब्द	विपरीत शब्द
भला	बुरा	सुबह	शाम
अपकार	उपकार	अपने	पराये
जीत	हार	भीतर	बाहर
हानि	लाभ	पास	दूर
कमजोर	बलवान	सच्चा	झूठा

❐ योग्यता-विस्तार

8. विद्यार्थी स्वयं करें।

9. विद्यार्थी स्वयं करें।

10. विद्यार्थी स्वयं करें।

❐ जीवन-मूल्य

11. विद्यार्थी स्वयं करें। ❐

हिंदी व्याकरण–5

1. भाषा और व्याकरण

(क) 1. अपने मन के भावों और विचारों को बोलकर, लिखकर अथवा पढ़कर प्रकट करने के साधन को भाषा कहते हैं।

2. **भाषा के रूप**—भाषा के निम्नलिखित दो रूप हैं—

1. **मौखिक भाषा**—जिस भाषा को मुख से बोला और कानों से सुना जाता है, उसे मौखिक भाषा कहते हैं। इस भाषा को उच्चरित भाषा भी कहते हैं। इस भाषा के उदाहरण हैं—बातचीत, वाद-विवाद, भाषण आदि।

2. **लिखित भाषा**—मन के भावों तथा विचारों को जब लिखकर प्रकट किया जाता है, तो यह भाषा का लिखित रूप कहलाता है।

लिखित भाषा के उदाहरण हैं—पत्र, लेख, कहानी, समाचार-पत्र, पुस्तक आदि।

3. बोली किसी प्रांत के बहुत छोटे-से क्षेत्र में बोली जाती है। यह भाषा का क्षेत्रीय रूप होता है।
4. व्याकरण वह शास्त्र है, जिससे भाषा के शुद्ध रूप तथा प्रयोग का ज्ञान प्राप्त होता है। व्याकरण में भाषा को नियमित और व्यावहारिक बनाने के नियम सम्मिलित होते हैं।
5. किसी भी भाषा की उच्चरित ध्वनियों के लिखने का ढंग लिपि कहलाता है।

(ख) 1. ✗ 2. ✓ 3. ✗
4. ✓ 5. ✓ 6. ✓

(ग) मौखिक लिखित सांकेतिक

(घ) 1. भाषा 2. हिंदी 3. मौखिक, लिखित 4. बोली 5. लिपि

(ङ) देवनागरी देवनागरी
गुरुमुखी रोमन
फारसी बांग्ला

(च) वर्ण, वर्णमाला, वर्णों के भेद
शब्द-रूप भेद, महत्त्व
वाक्य-भेद, वाक्य-विश्लेषण, वाक्य-रचना

(छ) हिंदी, संस्कृत, कश्मीरी, मराठी, गुजराती, पंजाबी, मलयालम, तमिल, कन्नड़, बांग्ला, असमिया, तेलुगू, मणिपुरी, सिंधी, कोंकणी, उड़िया, नेपाली, संथाली, उर्दू, बोड़ो, डोगरी, मैथिली।

❑

2. वर्ण और वर्तनी

(क) 1. वह सबसे छोटी ध्वनि जिसके और टुकड़े नहीं हो सकते, वर्ण कहलाती है। वर्णों के दो भेद हैं—स्वर और व्यंजन।

2. जिन वर्णों का उच्चारण बिना किसी ध्वनि की सहायता से किया जा सकता है और जो व्यंजनों के उच्चारण में सहायक होते हैं, उन्हें स्वर कहते हैं।

स्वर के भेद—स्वर के निम्नलिखित तीन भेद हैं—

(i) **ह्रस्व स्वर**—जिन स्वरों के उच्चारण में बहुत थोड़ा समय लगता है, उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। ये संख्या में चार हैं—अ, इ, उ, ऋ।

(ii) **दीर्घ स्वर**—जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व से दोगुना समय लगता है, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। ये संख्या में सात हैं—आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

(iii) **प्लुत स्वर**—जिन स्वरों का उच्चारण करते समय ह्रस्व से तिगुना समय लगता है, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं। जैसे—ओ३म। भै।

3. **व्यंजन के भेद**—व्यंजन के निम्नलिखित तीन भेद हैं—

(i) **स्पर्श व्यंजन**—वर्णमाला में 'क' से 'म' तक के पाँच वर्ग स्पर्श व्यंजन कहलाते हैं।

कवर्ग	:	क	ख	ग	घ	ङ
चवर्ग	:	च	छ	ज	झ	ञ
टवर्ग	:	ट	ठ	ड	ढ	ण
तवर्ग	:	त	थ	द	ध	न
पवर्ग	:	प	फ	ब	भ	म

(ii) **अंतःस्थ व्यंजन**—ये केवल चार हैं—य, र, ल, व।

(iii) **ऊष्म व्यंजन**—ये भी चार हैं—श, ष, स ह।

4. **संयुक्त व्यंजन**—एक से अधिक व्यंजनों के मेल से बने व्यंजनों को संयुक्त व्यंजन कहते हैं। इनमें चार मुख्य हैं—

श् + र = श्र	क् + ष = क्ष	ज् + ञ = ज्ञ	त् + र = त्र
श्रम, श्रमिक	रक्षा, कक्षा	यज्ञ, ज्ञान	पत्र, चित्र

(च) 1. वर्णमाला 2. आवाज 3. चार 4. व्यंजन 5. मात्रा 6. संयोग

(ग) आ + व् + आ + ज् + अ
उ + द् + आ + ह् + अ + र् + अ + ण् + अ
भ् + अ + व् + अ + न् + अ
अ + ज् + आ + य् + अ + ब् + अ + घ् + अ + र् + अ
ह् + इ + म् + आ + ल् + अ + य् + अ

(घ) वर्षा ट्रक आम्र ड्रम

(ङ) घास नरम कल्याण नौकर

❑

3. शब्द-विचार

(क) 1. दो या दो से अधिक वर्णों के सार्थक मेल को शब्द कहते हैं।
जैसे—बादल, फूल, कलम, आग, सूर्य, आदमी आदि।

2. उत्पत्ति अथवा स्रोत के आधार पर शब्द पाँच प्रकार के होते हैं—
(i) तत्सम शब्द (ii) तद्भव शब्द (iii) देशज शब्द (iv) विदेशज शब्द (v) संकर शब्द

3. रचना के आधार पर शब्द तीन प्रकार के होते हैं—
(i) रूढ़ शब्द (ii) यौगिक शब्द (iii) योगरूढ़ शब्द

4. विकारी शब्दों के चार भेद हैं—(क) संज्ञा (ख) सर्वनाम (ग) विशेषण (घ) क्रिया। अविकारी शब्दों के भी चार भेद हैं—(क) क्रिया-विशेषण (ख) संबंधबोधक (ग) समुच्चयबोधक (घ) विस्मयादिबोधक

(ख) **रूढ़ शब्द**—जल, घोड़ा, बात
यौगिक शब्द—रसोईघर, हिमालय, नरपति
योगरूढ़ शब्द—लंबोदर, दशानन, जलज
संकर शब्द—रेलगाड़ी, टिकटघर, बमवर्षा
विदेशज शब्द — मेट्रो, आदमी, इस्पात

(ग) हस्त-हाथ, मयूर-मोर, अग्नि-आग, नासिका-नाक
कर्ण-कान, दीपक-दीया, ओष्ठ-ओठ, पंछी-पक्षी

❑

4. संज्ञा

(क) 1. किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान, जाति, समूह अथवा भाव का बोध कराने वाले शब्द संज्ञा कहलाते हैं।
उदाहरण—रमन के **कारखाने** के सामने **मजदूरों** ने **प्रदर्शन** किया।

2. संज्ञा के निम्नलिखित तीन भेद हैं—
(i) व्यक्तिवाचक संज्ञा
(ii) जातिवाचक संज्ञा
(iii) भाववाचक संज्ञा

3. जिस शब्द से किसी विशेष व्यक्ति, विशेष स्थान, विशेष पशु या विशेष वस्तु आदि का बोध होता है, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं तथा जिन संज्ञा शब्दों से किसी जाति के सभी व्यक्तियों, पशुओं, स्थानों अथवा वस्तुओं का पता चलता है, वे जातिवाचक संज्ञाएँ कहलाती हैं।

4. जिन संज्ञा शब्दों से किसी प्राणी अथवा पदार्थ के गुण-दोष, अवस्था अथवा दशा का बोध होता है, उन्हें भाववाचक संज्ञाएँ कहते हैं; जैसे—बुढ़ापा, बचपन, मोटापा, सुंदरता आदि।

5. जातिवाचक संज्ञा के दो उपभेद हैं—
(i) द्रव्यवाचक संज्ञा (ii) समुदायवाचक संज्ञा

(ख)

खट्टा	अच्छा
हँसना	मोटा
पढ़ना	हारना
लड़ना	शिष्ट
जागना	भूलना

(ग) व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा

(घ) 1. खटास 2. चोरी 3. पढ़ाई-लिखाई 4. बहाव 5. बचपन, जीवन, अवस्था 6. आलस

(ङ) विद्यार्थी — कक्षा
नेता — दल
फौजी — फौज

❑

5. लिंग

(क) 1. पुरुष अथवा स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्द लिंग कहलाते हैं।
उदाहरण—मोर-मोरनी, नौकर-नौकरानी

2. लिंग के निम्नलिखित दो भेद हैं—

(i) **पुल्लिंग**—पुरुष जाति का बोध कराने वाले शब्दों को पुल्लिंग कहते हैं; जैसे—लड़का, घोड़ा।

(ii) **स्त्रीलिंग**—स्त्री जाति का बोध कराने वाले शब्दों को स्त्रीलिंग कहते हैं; जैसे—लड़की, घोड़ी।

(ख) रानी — नाइन
माता — मोरनी
शेरनी — नागिन
अभिनेत्री — लेखिका
नायिका — मामी
जेठानी — बहन

(ग) 1. चुहिया बिल से बाहर आयी। 2. अभिनेत्री ने कमाल कर दिया।
3. भारत वीरांगनाओं की धरती है। 4. लड़की छत पर खड़ी थी।
5. रूपवती को शृंगार की क्या जरूरत। 6. माताजी दिल्ली गई है।

(घ) **(लड़का-लड़की)** (**भाई**-बहन) कुत्ता-**कुतिया**)

(ङ) रानी — नोकरानी — मोरनी
मालिन — धोबिन — सुनारिन
देवी — पुत्री — दासी
ललाइन — चौबाइन — ठकुराइन

❑

6. वचन

(क) 1. शब्द के जिस रूप से उसकी संख्या का पता चलता है, उसे वचन कहते हैं;
जैसे—लड़का-लड़के
पुस्तक-पुस्तकें

2. वचन के निम्नलिखित दो भेद हैं—

1. **एकवचन**—शब्द के जिस रूप से उसके संख्या में एक होने का पता चलता है, उसे एकवचन कहते हैं।
जैसे—लड़का, पुस्तक, कुत्ता

2. **बहुवचन**—शब्द के जिस रूप से उसके संख्या में एक से अधिक होने का पता चलता है, उसे बहुवचन कहते हैं;
जैसे—लड़के, पुस्तकें, कुत्ते

(ख) **आँख**-आँखें—नदी में नहाने के बाद उसकी आँखें लाल हो गईं।
पुस्तक-पुस्तकें—पुस्तकालय में सभी विषयों की पुस्तकें हैं।
बच्चा-बच्चे—बच्चे बस से उतर रहे हैं।
लता-लताएँ—लताओं पर कितने सुंदर फूल खिले हैं।
अध्यापक-अध्यापकगण—आज सभी अध्यापकगण प्रार्थना में उपस्थित थे।
सहेली-सहेलियाँ—उसकी शादी में सभी सहेलियाँ खूब नाचीं।
चिड़िया-चिड़ियाँ—शिकारी के आते ही सभी चिड़ियाँ उड़ गईं।
भालू-भालुओं—भालुओं को शहद बहुत पसंद है।

(ग) खरगोश दौड़ रहा है। खरगोश दौड़ रहे हैं।

❑

7. कारक

(क) 1. संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस रूप से उनका संबंध क्रिया के साथ जाना जाता है, उसे कारक कहते हैं।

2. कारक के आठ भेद हैं—
- कर्त्ता
- कर्म
- करण
- संप्रदान
- अपादान
- संबंध
- अधिकरण
- संबोधन

(ख) कर्ता कारक कर्म कारक
अपादान कारक संप्रदान कारक
करण कारक संबंध कारक

(ग) 1. में 2. लिए 3. से 4. का 5. में 6. ने

❑

8. सर्वनाम

(क) 1. संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाने वाले शब्द सर्वनाम कहलाते हैं;
जैसे—मैं, हम, तू, तुम, यह, वह।

2. सर्वनाम के छः भेद हैं—

1. पुरुषवाचक सर्वनाम	2. निश्चयवाचक सर्वनाम
3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम	4. संबंधवाचक सर्वनाम
5. प्रश्नवाचक सर्वनाम	6. निजवाचक सर्वनाम

3. पुरुषवाचक सर्वनाम तीन प्रकार के होते हैं—
(i) उत्तम पुरुष-मैं, हम (ii) मध्यम पुरुष-तू, तुम (iii) अन्य पुरुष-वह, वे

(ख) **चुहिया** पुस्तक पर बैठी है। **उसको** दूर से एक बिल्ली देख रही है। बिल्ली को देखकर **वह** डर गई। इससे पहले कि बिल्ली **उस** पर झपटती, **वह** भाग कर बिल में घुस गई।

(ग)

1. कौन—प्रश्नवाचक सर्वनाम	2. कुछ—अनिश्चयवाचक सर्वनाम
3. उसने—अन्य पुरुष सर्वनाम	4. वह, यह—निश्चयवाचक सर्वनाम
5. कौन—प्रश्नवाचक सर्वनाम	6. वह—निश्चयवाचक सर्वनाम
7. मैंने—निजवाचक सर्वनाम	8. कुछ—अनिश्चयवाचक सर्वनाम
9. वह—अन्य पुरुष सर्वनाम	

❑

9. विशेषण

(क) 1. संज्ञा तथा सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं।
उदाहरण—**गोल** गेंद
लाल टमाटर

2. विशेषण के निम्नलिखित चार भेद हैं—
   1. गुणवाचक विशेषण
   2. परिमाणवाचक विशेषण
   3. संख्यावाचक विशेषण
   4. सार्वनामिक विशेषण

3. परिमाणवाचक विशेषण के दो भेद हैं—
(i) निश्चित परिमाणवाचक—दो किलो टमाटर, चार लीटर दूध
(ii) अनिश्चित परिमाणवाचक—थोड़ी चीनी, कुछ घी

4. संख्यावाचक विशेषण दो प्रकार के होते हैं—
(i) निश्चित संख्यावाचक विशेषण: एक, दो
(ii) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण: थोड़े लोग, कुछ पुस्तकें

(ख) 1. गुणवाचक विशेषण
2. निश्चित संख्यावाचक विशेषण
3. निश्चित परिमाणवाचक विशेषण
4. गुणवाचक विशेषण
5. अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण

(ग)

विशेषण	**विशेष्य**
लाल	गुलाब
थोड़ा	दूध
एक लीटर	कोक
नमकीन	पकौड़ी
नीली	कमीज

❑

10. क्रिया

(क) 1. जिस शब्द से किसी कार्य के करने या होने का पता चलता है, उसे क्रिया कहते हैं। उदाहरण—आना, पढ़ना।
2. कर्म की दृष्टि से क्रिया के दो भेद होते हैं—
   1. **अकर्मक क्रिया**—जिन वाक्यों में कर्ता के साथ कर्म का प्रयोग नहीं किया जाता तथा क्रिया का करना कर्ता में ही रहता है, ऐसे वाक्यों में प्रयोग होने वाली क्रियाएँ अकर्मक क्रियाएँ कहलाती हैं। जैसे—कुत्ता भौंकता है।
   2. **सकर्मक क्रिया**—जिन वाक्यों में क्रिया के कर्म की आवश्यकता होती है, उन्हें सकर्मक क्रिया कहते हैं।
   जैसे—नमन ने **पुस्तक** पढ़ी।

(ख) **पढ़ना**—पंडितजी संस्कृत पढ़ रहे हैं।
चलना—वह रोज पाँच किलोमीटर चलता है।
लिखना—वह विज्ञान पर निबंध लिख रहा है।
हँसना—राहुल सर्कस में जोकर देखकर बहुत हँसा।

(ग) 1. सकर्मक क्रिया 2. सकर्मक क्रिया
3. सकर्मक क्रिया 4. अकर्मक क्रिया

(घ) **चढ़वाना**—मैंने कल बूढ़ी दादी को सीढ़ियों पर चढ़वाया।
पढ़वाना—चाचाजी ने डाकिया से पत्र पढ़वाया।
सुनाना—कल दादी ने परियों की कहानी सुनाई।
लिखवाना—बैंक मैनेजर ने मुझसे आवेदन-पत्र लिखवाया।

❑

11. काल

(क) 1. क्रिया के जिस रूप से उसके होने अथवा करने के समय का ज्ञान होता है, उसे काल कहते हैं।

2. काल के निम्नलिखित तीन भेद हैं—

1. **भूतकाल**—रमन मुंबई **गया था।**
   नानीजी ने **भजन** गाया।
2. **वर्तमान काल**—शुभम चाय **बनाता** है।
   कमल टॉफी **खा रहा है।**
3. **भविष्यत् काल**—राम **गाना गाएगा।**
   विशाल **आता होगा।**

(ख) 1. पढ़ाया 2. रहे 3. करेगी 4. पढ़ी 5. रहे

(ग) 1. **वर्तमानकाल**—रमन पत्र पढ़ता है।
भूतकाल—रमन ने पत्र पढ़ा।
भविष्यत् काल—रमन पत्र पढ़ेगा।

2. **वर्तमानकाल**—रीना दिल्ली जा रही है।
भूतकाल—रीना दिल्ली गई थी।
भविष्यत् काल—रीना दिल्ली जाएगी।

3. **वर्तमानकाल**—पूजा पत्र लिख रही है।
भूतकाल—पूजा ने पत्र लिखा।
भविष्यत् काल—पूजा पत्र लिखेगी।

(घ) 1. भूतकाल, पूर्ण भूतकाल
2. भूतकाल, अपूर्ण भूतकाल
3. भविष्यत् काल, संभाव्य भविष्यत्
4. वर्तमान काल, संदिग्ध वर्तमानकाल
5. वर्तमानकाल, अपूर्ण वर्तमानकाल

❑

12. वाच्य

(क) 1. वाच्य क्रिया का वह रूप होता है जिसके द्‌वारा यह जाना जाता है कि कार्य का प्रधान विषय कर्ता है, कर्म है अथवा भाव है।

2. वाच्य के तीन भेद होते हैं—

1. कर्तृवाच्य—तनु पत्र पढ़ती है।
   सचिन पतंग उड़ाता है।

2. कर्मवाच्य—तनु द्वारा पत्र पढ़ा जाता है।
   सचिन द्वारा पतंग उड़ाई जाती है।
3. भाववाच्य—वृद्धा से चला नहीं जाता।
   बालक से दौड़ा नहीं जाता।

(ख) 1. माँ के द्वारा खीर बनाई जाएगी।
2. राधा के द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है।
3. हलवाई के द्वारा मिठाई बनाई जाती है।
4. राहुल के द्वारा कहानी लिखी जाती है।

(ग) 1. रमन से तैरा जा रहा है।
2. नेहा से रोया जा रहा है।
3. बालक से डरा जाता है।
4. गुड़िया से नाचा नहीं जाता।
5. मुझसे उठा नहीं जाता।

❑

13. अविकारी शब्द (अव्यय)

(क) 1. वचन, लिंग, काल, कारक आदि के कारण जिन शब्दों में कोई विकार नहीं आता है, उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं।
अविकारी शब्दों के चार भेद हैं—
1. क्रिया-विशेषण 2. संबंधबोधक अव्यय 3. समुच्चयबोधक अव्यय 4. विस्मयादिबोधक अव्यय।
2. जो अविकारी शब्द संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के साथ जुड़कर उनका संबंध वाक्य में प्रयुक्त अन्य शब्दों से बताते हैं, उन्हें संबंधबोधक अव्यय कहते हैं।
उदाहरण—चोर **के पीछे** सिपाही भागा।
कुत्ता टब **के अंदर** है।
3. जो शब्द दो शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों को मिलाते हैं, उन्हें योजक या समुच्चयबोधक कहते हैं।
इसके दो भेद हैं—
(i) समानाधिकरण समुच्चयबोधक
(ii) व्यधिकरण समुच्चयबोधक
4. जो शब्द विस्मय, हर्ष, शोक, घृणा, प्रशंसा, भय आदि भावों को प्रकट करते हैं, उन्हें विस्मयादिबोधक कहते हैं।

(ख) 1. **शाबाश!**—शाबाश! तुम कक्षा में प्रथम आए हो।
2. **ओह!**—ओह! आप गिर गए।

3. **छिः!**—छिः! तुम्हारे कपड़ों में से बदबू आ रही है।
4. **सावधान!**—सावधान! आगे पुल टूटा हुआ है।
5. **अरे!**—अरे! तुम घर के अंदर कैसे आए?

(ग) 1. और 2. कहीं 3. अथवा 4. बल्कि 5. और

(घ) **के पीछे**—मेरे मकान के पीछे पीपल का पेड़ है।
से अलग—माँ से अलग होकर बच्चा रोता रहा।
से पहले—दीवाली से पहले दशहरा मनाया जाता है।
से दूर—मंदिर गाँव से दूर पहाड़ी पर स्थित है।
की जगह—आज के मैच में सचिन की जगह रोहित को चुना गया।

❑

14. विलोम शब्द

विपरीतार्थक शब्द—

प्रकाश	विपक्ष
अनावश्यक	पाप
बदबू	अवनति
अनुचित	विदेश
अज्ञान	मित्र
अन्याय	नीरस

❑

15. पर्यायवाची तथा अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

(क) 1. अमृत—सुधा, सोम, अमी
2. कमल—पंकज, सरोज, राजीव
3. पर्वत—पहाड़, अचल, गिरि
4. मनुष्य—मानव, आदमी, नर
5. हनुमान—पवनपुत्र, कपीश, पवनसुत

(ख) 1. आस्तिक 2. देशाटन 3. अभागा 4. कृतघ्न

❑

16. शब्द-युग्म

अग्र-आगे—मेरे घर से थोड़ा आगे अस्पताल है।
उग्र-कठोर—पुलिस ने अपराधी को कठोर दंड दिया।

चपल-चंचल—यह बालक बहुत चंचल है।
चपला-बिजली—आसमान में बिजली चमक रही थी।
नारी-स्त्री—वह स्त्री बहुत ही धनवान है।
नाड़ी-नब्ज—वैद्यजी ने नब्ज देखकर बीमार का हाल बताया।

❑

17. वाक्य-विचार

(क) 1. भावों तथा विचारों को प्रकट करने वाला व्यवस्थित शब्द-समूह वाक्य कहलाता है।
उदाहरण—सूर्य उदय हो रहा है।
2. वाक्य में जिसके विषय में कुछ बताया जाता है, उसे उद्देश्य कहते हैं।
उदाहरण—पक्षी उड़ रहे हैं।
उद्देश्य
3. अर्थ के आधार पर वाक्य के निम्नलिखित आठ भेद होते हैं—

1. विधानवाचक वाक्य	2. निषेधवाचक वाक्य
3. विस्मयवाचक वास्य	4. संदेहवाचक वाक्य
5. आज्ञावाचक वाक्य	6. संकेतवाचक वाक्य
7. इच्छावाचक वाक्य	8. प्रश्नवाचक वाक्य

4. रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद होते हैं—
(i) **सरल वाक्य**—कबूतर उड़ा।
अध्यापक आया।
(ii) **संयुक्त वाक्य**—आज बुआजी आने वाली भी, किंतु नहीं आईं।
रमा मंदिर गई परंतु नेहा गुरुद्वारे गई।
(iii) **मिश्र वाक्य**—रोहित ने उत्तर दिया कि शीशा उसने नहीं तोड़ा।
हो सकता है कि हम नया टेलीविजन खरीदें।

(ख) 1. शायद उसने अपना गृहकार्य कर लिया।
2. निशा नहीं आई।
3. शाबाश! तुम्हें पुरस्कार मिला।
4. क्या रोहित ने पुस्तक पढ़ी?
5. नम्रता, प्रतिदिन पढ़ा करो।
6. वाह! विभा नृत्य कर रही है।

(ग) 1. सरल वाक्य | 2. संयुक्त वाक्य
3. मिश्र वाक्य | 4. मिश्र वाक्य
5. सरल वाक्य

(घ) 1. **आनंद** स्टेशन पर पहुँचा।

2. **चिड़िया** ने घोसला बनाया।

3. **वीर** सावरकर स्वंत्रता सेनानी थे।

4. **दयमंती ने** कुत्ते को पुचकारा।

5. **रानी लक्ष्मीबाई** वीरांगना थी।

(ङ) 1. शाम हुई और बच्चे खेलने लगे।
2. बिल्ली ने चूहे को पकड़ा और खा लिया।
3. रमन और उसकी दादी शहर आए।
4. नेहा बाजार गई और केले लाई।

(च) 1. रीमा को साड़ियाँ निकालनी थीं, इसलिए उसने अलमारी खोली।
2. ज्यों ही घंटी बजी त्यों ही बच्चे कक्षा में जाने लगे।
3. यदि आप लघुकथा लिखते हो, तो उसे छपने के लिए भी भेजो।
4. लता चाहती है कि उसकी बेटी अभिनेत्री बनजाए।

❑

18. विराम-चिह्न

(क) 1. भाषा के लिखित रूप में विराम देने के लिए जिन चिह्नों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें विराम-चिह्न कहते हैं।
2. पूर्ण-विराम से कुछ देर कम रुकने के लिए अर्ध-विराम का प्रयोग करते हैं तथा अर्ध-विराम से कम देर तक रुकने के लिए अल्प-विराम का प्रयोग किया जाता है।

(ख) 1. पूर्ण विराम
2. अर्ध-विराम
3. अल्प-विराम
4. विस्मयसूचक चिह्न
5. उद्धरण चिह्न
6. इकहरा
7. प्रश्नसूचक चिह्न
8. निर्देशक चिह्न

(ग) 1. क्या वर्षा रुक गई?
2. संतोष ने कहा, ''मैं कल नहीं आऊँगी।''
3. आज माँ ने दाल बनाई है।
4. रमन, श्याम, महेश और दिनेश दिल्ली गए हैं।
5. ''तुम कल चलोगे?'' महेश ने पूछा।
6. ढेर सारे फूल कौन लाया?
7. सरिता बोली, ''भैया ने बुलाया था।''

❑

19. मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ

लट्टू होना—मुग्ध होना
बच्चा उस खिलौने पर लट्टू हो गया।
जूते चाटना—चापलूसी करना
आजकल जूते चाटने वाले की तरक्की जल्दी होती है।
कान पकड़ना—गलती मानना
शिवम ने अध्यापक के सामने कान पकड़कर माफी माँगी।
कलम तोड़ना—बहुत बड़ी रचना करना
कलम तोड़ कविता लिखना हर किसी के बस की बात नहीं।

❑

20. अनुच्छेद लेखन

विद्यार्थी स्वयं करें।

❑

21. पत्र-लेखन

1 से 5 तक विद्यार्थी स्वयं करें।

❑

22. कहानी-लेखन

विद्यार्थी स्वयं करें।

23. निबंध-लेखन

1 से 5 तक विद्यार्थी स्वयं करें

❑

सेमेस्टर-1 अद्र्धवार्षिक परीक्षा प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र

1. (क) (ii) (ख) (iv) (ग) (iv) (घ) (i) (ङ) (ii)
2. (क) अपशकुन (ख) प्रकृति (ग) सजावट (घ) कोठरी (ङ) मिजोरम
3. झगड़ों को मिटाकर, का कष्ट हटाकर,
   दूर भगाकर, सुख-समृद्धि

4. (क) समाज के जीवन का आधार आपसी मेलजोल है।
   (ख) वित्तमंत्री रात के दो बजे एक चौकी पर बैठे दीये की रोशनी में कर-वसूली के कागजात देख रहे थे।
   (ग) चिड़िया पर अनेक विपदाएँ आईं—किसी ने उनके तिनकों को बिखेर दिया तथा आँधी ने उसे डराया और सताया।
   (घ) सूर्य से प्राप्त होने वाली ऊर्जा को 'सौर ऊर्जा' कहते हैं।
   (ङ) मिजोरम के मुख्य त्योहार चपचार कुट, मिमकुट व थालव फांग हैं। इन त्योहारों की मुख्य विशेषता यह है कि वहाँ के निवासी अधिकांश किसान हैं, जो अपने त्योहारों पर लोकगीत व लोकनृत्य के द्वारा कृषि की झलक दिखाते हैं।

5. (क) (iv)   (ख) (iii)   (ग) (ii)   (घ) (i)

6. (क) प्रेम   (ख) देवता   (ग) अभिशाप   (घ) रिक्तता
   (ङ) सुख-समृद्धि (च) असीमित

7.

जातिवाचक संज्ञा	व्यक्तिवाचक संज्ञा
(क) पशु	(क) रामायण
(ख) स्त्री	(ख) ताजमहल
(ग) बच्चा	(ग) हिमालय
(घ) मनुष्य	(घ) सोनीपत

8.

नी	मोरनी	जाटनी	शेरनी
इन	मालिन	सुनारिन	नाइन
ई	दादी	घोड़ी	सखी

9. **चढ़वाना**—मैंने बूढ़ी दादी को हाथ पकड़कर सीढ़ियों पर चढ़वाया।
   पढ़वाना—चाचाजी ने डाकिया से पत्र पढ़वाया।
   सुनाना—दादीजी को कहानियाँ सुनाना पसंद है।

सेमेस्टर-2 वार्षिक परीक्षा प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र

1. (क) (ii)   (ख) (ii)   (ग) (iv)   (घ) (i)   (ङ) (i)
2. (क) मोह   (ख) धर्म   (ग) अमर   (घ) झुकने   (ङ) अच्छाई
3. लहरों, डरकर
   कोशिश, हार नहीं
   नन्हीं चींटी, दाना
   चढ़ती दीवारों, सौ बार
4. (क) गुरु गोरखनाथ के उपदेश सुनकर गोपीचंद के मन में विराग उत्पन्न हो गया।
   (ख) बरसात के मौसम में अत्यधिक वर्षा के कारण बाढ़ की स्थिति पैदा हो जाती है। हमारे आस-पास घर, स्कूल, सड़कों, रेल की पटरियों पर भी पानी भर जाता है। देश के कई भाग बाढ़ में डूब जाते हैं।
   (ग) महात्मा बुद्ध ने सुप्रिया को 'तुम्हारा निश्चय पूरा हो!' कहकर आशीर्वाद दिया।

(घ) दयाराम का स्वभाव नम्र था।

(ङ) एक बार बरसात के मौसम में शेरसिंह की अनाज की भरी गाड़ी दलदल में फँस गई। उसके कमजोर बैल बैलगाड़ी को दलदल से बाहर न निकाल सके। उस संकट के समय दयाराम ने अपने मजबूत बैलों द्वारा अनाज से भरी गाड़ी को दलदल से बाहर निकाल दिया। उस घटना ने शेरसिंह के व्यवहार में परिवर्तन ला दिया।

5. (क) (iv) (ख) (iii) (ग) (ii) (घ) (i)

6. (क) मुसीबत, विपदा (ख) दुग्ध, गौरस
(ग) तरिणी, तटिनी (घ) वन, अरण्य
(ङ) कामना, अरमान (च) नारायण, दामोदर

7. 1. **शाबाश!**—शाबाश! तुम **कक्षा** में प्रथम आए हो।
2. **ओह!**-ओह! आप **गिर** गए।
3. **छि:!**—छि:! तुम्हारे **कपड़ों** में से बदबू आ रही है।
4. **सावधान!**—सावधान! आगे पुल टूटा हुआ है।
5. **अरे!**-अरे! तुम घर के अंदर कैस आए?

8. (क) सुधा (ख) पंकज
(ग) पहाड़ (घ) मानव

9. **कमर कसना**—तैयार होना
पिछले मैच में हारने के बाद भारतीय टीम ने कमर कस ली है।
खून का प्यासा—जान का दुश्मन
जमीन के चक्कर में दोनों भाई एक-दूसरे के खून के प्यासे हो गए।
कान खाना—बहुत शोर करना
कक्षा में बच्चों ने अध्यापक के कान खा लिए।
तारे गिनना—उत्सुकता से प्रतीक्षा करना
परीक्षा के बाद बच्चे परिणाम के लिए तारे गिन रहे थे।